Hindi

Code No. 301

भूमिका

हिंदी देश में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है तथा यह संपर्क-भाषा और कामकाजी भाषा के रूप में भी प्रयुक्त होती है। इस भाषा का इतिहास लगभग 1000 ईसवी से शुरू होता है और एक लंबे अंतराल में इसमें अनगिनत रचनाओं की सृष्टि की गई और इसकी वैज्ञानिकता सर्वमान्य रही। इसमें रचनात्मक और साथ ही ज्ञान के साहित्य का विशाल भंडार है। अतः विषय के रूप में हिंदी भाषा का अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

औचित्य

दसवीं कक्षा तक विद्यार्थी भाषा का आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर लेता है, किंतु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भाषा के विविध प्रयोगों का गहन अध्ययन और उपयोग आवश्यक है।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करता है, जैसे - इस पाठ्यक्रम में साहित्य और भाषा का समन्वय किया गया है जिससे विद्यार्थी एक ओर दैनिक जीवन और आजीविका के लिए भाषा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें और दूसरी ओर हिंदी भाषा तथा साहित्य का उच्चतर अध्ययन कर पाने के योग्य बन सकें।

पूर्व अपेक्षाएँ

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश से पहले विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों से संबंधित निम्नलिखित योग्यताएँ प्राप्त कर चुके होंगे-

- भाषा के व्यावहारिक और साहित्यिक रूपों का अर्थग्रहण।
- कथन और वर्णन की क्षमता।
- जीवन मूल्यों की पहचान।
- तालिका, आरेख आदि बनाना तथा उनकी व्याख्या।
- बोलने और लिखने में व्याकरण-सम्मत भाषा का उपयोग।

उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद आप:

- भाषिक और साहित्यिक योग्यता का विकास कर उनका प्रयोगउपयोग कर सकेंगे;
- हिंदी की व्याकरण-सम्मत, समाज-संदर्भित और व्यावहारिक अभिव्यक्ति का विकास कर सकेंगे;
- हिंदी की साहित्यिक-सामाजिक संवेदना की समझ और उसे परंपरा से जोड़ कर प्रस्तुतु कर सकेंगे;
- साहित्यिक, प्रयोजनपरक और व्यावहारिक भाषा के विविध रूपों की तुलना कर सकेंगे;
- राष्ट्रीय भावधारा और राष्ट्रीय समस्याओं की पहचान कर उनका उल्लेख कर सकेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद आप:

- हिंदी भाषा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे;
- रोजमर्रा की जिंदगी में मौखिक भाषा का उपयुक्त उपयोग कर सकेंगे;
- किसी पठित या अपठित उक्ति की तर्क सहित व्याख्या कर सकेंगे;
- निर्धारित रचनाओं के कथ्य और भाषा की विशेषताओं को रेखांकित कर सकेंगे;
- नवीन गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं के स्वरूप की पहचान कर उनका वर्णन कर सकेंगे;
- पठित-अपठित अंश ,काव्यांश.गद्यांशद्ध की सराहना करके उन पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- व्याकरणिक तथा सामाजिक संदर्भों के अनुरूप संप्रेषणपरक भाषा का उपयोग कर सकेंगे;
- हिंदी साहित्य के इतिहास की जानकारी हासिल कर उनका उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रयोजन-परक भाषा का ज्ञान प्राप्त कर उनका उपयोग कर सकेंगे;
- संचार तथा प्रोद्योगिकी अथवा विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त विशिष्ट भाषा का उल्लेख कर सकेंगे।

क्षेत्र तथा रोजगार के अवसर

इस विषय में रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार है:

- विद्यालयी शिक्षण
- महाविद्यालयी शिक्षण
- विश्वविद्यालयी शिक्षण
- पत्रकारिता

- जनसंचार
- अनुवाद
- मीडिया इत्यादि

शैक्षणिक योग्यता: दसवीं उत्तीर्ण

अध्ययन का माध्यम: हिंदी

पाठ्यक्रम की अवधि:

पाठयक्रम के भाग	अंक: 85	समय (घंटे में)
1. केंद्रिक	85	210
क. सुनना	00	10
ख. बोलना	00	10
ग. पढ़ना	47	90
घ. लिखना		
(प्रयोजनमूलक भाषा)	28	
ङ. व्यावहारिक व्याकरण	10	40
2. वैकल्पिक	15	30
क. सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी		
ख. विज्ञान की भाषा - हिंदी		
कुल योग	**100**	**240**

(टिप्पणी: सुनना और पढ़ना कौशल द्वारा अर्थबोध होता है, जबकि बोलना और लिखना कौशल अभिव्यक्ति के साधन हैं।)

पाठ्यक्रम का विवरण

1. केंद्रिक

(क) सुनना व (ख) बोलना

अंक: 00 समय: 20 घंटे

लक्ष्य: इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थियों में सुनने के कौशल को विकसित करना है जिससे वे रेडियो, दूरदर्शन पर समाचार संवाद, वार्ता आदि सुनकर अर्थ ग्रहण कर सकें और शोर में भी घोषणाओं से अर्थ निकाल सकें। वे वाद-विवाद, समूह में बातचीत, औपचारिक-अनौपचारिक चर्चा आदि में भाग ले सकें और दैनिक जीवन में प्रयुक्त भाषा के मौखिक रूप से परिचित होकर उसका उपयोग करने की क्षमता विकसित कर सकें।

पूर्वज्ञान: भाषा के सुनकर अर्थ निकालने के साथ ही बोलने का सामान्य व्यावहारिक ज्ञान।

शिक्षण बिंदु

1. हिंदी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण
2. उच्चारण-संबंधी प्रमुख नियमों का ज्ञान
3. कविता का भावानुकूल पठन, करुण, हास्य, वीर आदि।
4. स्वर-लहर से युक्त वक्तव्य, भाषण, वाद-विवाद, साक्षात्कार, समूह में चर्चा-परिचर्चा, कार्यक्रम संचालन, अभिनय, वाचन आदि का अभ्यास।

(ग) पढ़ना

अंक: 47 **समय:** 90 **घंटे**

कविता पठन

लक्ष्य: इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थी को हिंदी-कविता का महत्त्व बताना है। इस इकाई को पढ़कर विद्यार्थी प्राचीन काल से लेकर अब तक की कविता के विभिन्न रूपों, प्रमुख कवियों आदि का परिचय प्राप्त करेंगे और हिंदी के प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं का अध्ययन करेंगे। इससे विद्यार्थियों की संवेदनशीलता बढ़ेगी और भाषा-शैली समृद्ध होगी।

पूर्वज्ञान: हिंदी के कुछ प्रतिनिधि कवियों और उनकी मुख्य रचनाओं का सामान्य परिचय।

शिक्षण बिंदु: हिंदी कविता की निम्नलिखित इकाइयों का अध्ययन अपेक्षित है

हिंदी कविता का विकास

कविता कैसे पढ़ें - पठित-अपठित

1. रैदास

2. मीराँबाई

3. तुलसीदास

4. रहीम

5. बिहारी

6. पद्माकर

7. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

8. महादेवी वर्मा

9. रामधारी सिंह दिनकर

10. गजानन माधव मुक्तिबोध

11. राजेंद्र उपाध्याय

रस, छंद, अलंकार

रस: भक्ति, शांत, शृंगार, वीर

छंद: दोहा, चौपाई, सवैया, बरवै, कवित्त, पद, मुक्तक छंद

अलंकार: उपमा, रूपक, दृष्टांत, अनुप्रास, अतिशयोक्ति, संदेह, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान, यमक, श्लेष, विशेषण विपर्यय, वक्रोक्ति।

अन्य: प्रतीक, बिंब-विधान।

योग्यता विस्तार

1. हिंदी साहित्य के इतिहास में कविता के विकास-क्रम का अध्ययन।

2. पाठ्यक्रम में निर्धारित कवियों की अन्य कविताओं का अध्ययन।

3. पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य कविताओं का अध्ययन।

4. समसामयिक पत्रा-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं का बोधपूर्वक पठन

गद्य का पठन

अंक: 18 **समय:** 40 **घंटे**

लक्ष्यः इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थी को गद्य भाषा के विविध रूपों, शैलियों और भंगिमाओं का परिचय देना है। विद्यार्थी गद्य की विविध विधाओं का परिचय प्राप्त करके अपने भाषा-ज्ञान को समृद्ध और सक्षम बना सकेंगे और उसका व्यावहारिक जीवन में उपयोग कर सकेंगे।

पूर्वज्ञानः गद्य-साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों की रचनाओं का सामान्य ज्ञान।

शिक्षण बिंदु

गद्य साहित्य का विकास

गद्य कैसे पढ़ें (अपठित गद्य)

हिंदी गद्य के प्रतिनिधि रचनाकार

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल - क्रोध (भावात्मक निबंध)
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी - कुटज (ललित निबंध)
3. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर - एक था पेड़ और एक था ठूँठ (चिंतन)
4. कहानी - दो कलाकार (मन्नू भंडारी); अनुराधा (पंकज बिष्ट)
5. व्यंग्य - पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ (हरिशंकर परिसाई)
6. संपादकीय - अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश (राजेंद्र यादव)
7. यात्रा वृत्तांत - आखिरी चट्टान (मोहन राकेश)
8. संस्मरण - जिजीविषा की विजय (कैलाश चंद्र भाटिया)

उपन्यास का अध्ययन

अंक: 08 **समय:** 25 **घंटे**

लक्ष्य: इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थियों में विविध प्रकार के पठन कौशल विकसित करना है, जैसे तीव्र पठन, लंबी सामग्री का पठन और बोधन।

पूर्वज्ञान: लंबी गद्य सामग्री के पठन की सामान्य योग्यता

शिक्षण बिंदु: उपन्यास पठन तथा वृंदावन लाल वर्मा के 'विराटा की पद्मिनी' नामक उपन्यास का अध्ययन।

1. उपन्यास पठन के सूत्र

2. उपन्यास के तत्त्व

3. विराटा की पद्मिनी (वृंदावनलाल वर्मा) का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

योग्यता विस्तार

1. गद्य साहित्य के संक्षिप्त इतिहास का अध्ययन।

2. समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं की विभिन्न रचनाओं का पठन।

3. अन्य निबंधों, उपन्यासों या कहानियों का पठन और अध्ययन।

(घ) लिखना

अंक: 28 **समय:** 70 **घंटे**

(ङ) प्रयोजनमूलक भाषा का औचित्य

सरकार की नीति के अनुसार कार्यालयी हिंदी सरकारी कार्यालयों, बैंकों और व्यावसायिक संस्थाओं में उपयोग में लाई जाती है। सरकारी कामकाज में प्रयुक्त हिंदी सामान्य बोलचाल की हिंदी से कुछ भिन्न होती है। इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद विद्यार्थी सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त हिंदी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

लक्ष्य: इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थी में लेखन कौशल का विकास करना है जिससे विद्यार्थी जीवन में विभिन्न अवसरों पर अपेक्षित लेखन-कार्य प्रभावी ढंग से कर सकें तथा प्रयोजनमूलक लेखन का उपयोग कर सकें।

पूर्वज्ञान: सही वाक्य लेखन का ज्ञान और विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने की क्षमता तथा हिंदी भाषा का सामान्य ज्ञान।

शिक्षण बिंदु

अभिव्यक्तिपरक लेखन

1. लिखें कैसे (साहित्यिक, सर्जनात्मक तथा प्रयोजनमूलक, कार्यालयी)

2. सार-संक्षेपण (साहित्यिक तथा कार्यालयी)

3. भाव-पल्लवन

4. निबंध-लेखन (वर्णनात्मक, भावात्मक और वैचारिक)

प्रयोजनपरक लेखन

5. पत्र-लेखन (व्यक्तिगत, व्यावहारिक, व्यावसायिक तथा कार्यालयी पत्राचार)
6. तालिका, आरेख, पाई-चार्ट आदि का निर्माण
7. कार्यालय ज्ञापन तथा कार्यालय आदेश
8. प्रतिवेदन, टिप्पण तथा प्रारूपण
9. प्रशासनिक शब्दावली और वाक्यांश

सृजनात्मक लेखन

संस्मरण लेखन, डायरी लेखन

योग्यता विस्तार

दैनिक जीवन में लेखन का अधिक से अधिक उपयोग, जैसे - समाचार पत्र-पत्रिकाओं में अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखकर भेजना, मित्रों को पत्रा लिखना, अपनी डायरी लिखना, यात्रा का वर्णन अपने मित्रा को लिख कर भेजना आदि।

(ङ) भाषा-प्रयोग और व्यावहारिक व्याकरण

अंक: 10 **समय:** 40 **घंटे**

लक्ष्य: इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थी को व्याकरण के नियमों और भाषा के स्वरूप से परिचित कराना है जिससे विद्यार्थी भाषा के स्वरूप से भली-भाँति परिचित होकर दैनिक जीवन में उसका आत्मविश्वास पूर्वक उपयोग कर सके।

पूर्वज्ञान: व्याकरण के आधारभूत नियमों का ज्ञान।

इकाई

1. मानक भाषा और प्रचलित शैलीगत उपयोग
2. लिखित और उच्चरित भाषा उपयोग
3. उच्चारण (बलाघात, अनुतान आदि)
4. शब्द परंपरा (शब्द निर्माण, शब्द शक्ति आदि)
5. शब्द भेद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि)

6. क्रियापदबंध

7. वाक्य संरचना

8. मुहावरे, लोकोक्तियाँ

9. तकनीकी शब्दावली

10. हिंदी की विभिन्न शैलियाँ (प्रयोजनमूलक, क्षेत्रीय आदि)

योग्यता विस्तार

सामाजिक व्यवहार में भाषा का सार्थक और प्रभावी उपयोग

(च) सृजनात्मक लेखन/चिंतन-मनन

अंक: 02 **समय:** 15 **घंटे**

लक्ष्य: इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थी में विचार प्रक्रिया को जागृत करना है जिससे विद्यार्थी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति को ग्रहण कर अपना मत-अभिमत प्रकट करने में समर्थ हो सके।

पूर्वज्ञान: सामान्य स्तर की मौखिक और लिखित अभिव्यक्तियों का अर्थग्रहण।

टिप्पणी: इस विषय पर अतिरिक्त सामग्री न देकर प्रस्तुत पाठों के साथ समेकित पठन सामग्री प्रदान की जा रही है।

योग्यता विस्तार

दैनिक जीवन से संबंधित विभिन्न विषयों पर विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक विचारों की प्रस्तुति।

(छ) परियोजना लेखन समय: 15 **घंटे**

लक्ष्य: इस इकाई का लक्ष्य विद्यार्थी में खेल-खेल में हिंदी भाषा तथा उसके विविध क्षेत्रों के अध्ययन के प्रति रुचि पैदा करना है।

पूर्वज्ञान: सामान्य ज्ञान के स्तर की छोटी-छोटी परियोजनाएँ बनाने का अनुभव।

शिक्षण बिंदु: पाठ्यक्रम संबंधी विविध क्षेत्रों पर आधारित परियोजनाओं का निर्माण।

शुद्ध ज्ञान आधारित

व्यावहारिक परियोजना

परियोजना लेखन की प्रक्रिया

योग्यता विस्तार: भाषा के विश्लेषणात्मक कौशलों की प्रक्रिया का दैनिक जीवन में उचित उपयोग तथा बिखरी हुई सामग्री की व्यवस्थित रूप से प्रस्तुति।

2. वैकल्पिक

अंक: 15 **समय:** 30 **घंटे**

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा को अधिक व्यावहारिक बनाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों के लिए दो विकल्प दिए जा रहे हैं। ये हैं,

(क) सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

(ख) विज्ञान की भाषा- हिंदी

विद्यार्थी अपनी रुचि और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए दो में से किसी एक विकल्प का चयन कर सकते हैं।

(क) सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

औचित्य

आधुनिक युग में संचार माध्यम के क्षेत्र में तेजी से प्रगति हुई है और दुनिया सिमट कर एक छोटे-से शहर के रूप में बदल चुकी है। समाज में खबरें एक-दूसरे के पास तुरंत ही पहुँच जाती हैं। ऐसे में जनसंचार माध्यम एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

जनसंचार माध्यमों के बढ़ते हुए महत्त्व के साथ-साथ भाषा का महत्त्व भी बढ़ा है। भारत में लोग अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी में ही ज्ञानार्जन और विचारों का आदान-प्रदान करना उचित समझते हैं। अतः हिंदी भाषा शिक्षा और सूचना अर्जित करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। विद्यार्थियों के लिए जनसंचार के क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा की विविधता के बारे में ज्ञान प्राप्त करना और उसकी नई शब्द-संपदा, नए-नए प्रयोगों, और संकल्पनाओं के बारे में जानना आवश्यक है।

पूर्व अपेक्षाएँ: जनसंचार माध्यमों, जैसे-अखबार, रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट तथा समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं आदि में प्रयुक्त हिंदी भाषा का सामान्य ज्ञान।

लक्ष्य: इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों में जन-संचार के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी भाषा का अपेक्षित ज्ञान प्रदान करना है।

इकाई:

1. सूचना प्रौद्योगिकी स्वरूप और महत्त्व
2. संचार माध्यम और उनके प्रकार
3. संचार की प्रक्रिया
4. संचार के माध्यमों के मुख्य अवयव
5. संचार माध्यमों की भाषा

योग्यता विस्तार

1. समाचार पत्रों को नवीन ज्ञान के आलोक में पढ़ना।
2. रेडियो के प्रसारण को नई दृष्टि से सुनना और समझना।
3. दूरदर्शन तथा अन्य टीवी. चैनलों के कार्यक्रमों को नई दृष्टि से देखना।
4. स्थापित अखबार के कार्यालय में जाकर वहाँ के क्रियाकलापों और विभिन्न गतिविधियों की प्रक्रिया के बारे में परिचय प्राप्त करना।
5. कंप्यूटर और इंटरनेट से आवश्यकतानुसार तथा विषयानुसार सूचनाएँ जुटाना।

(ख) विज्ञान की भाषा-हिंदी

औचित्यः

विज्ञान का जीवन में बहुत महत्त्व है। कुछ वर्षों पहले व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता था कि विज्ञान को अंग्रेजी के अलावा भी किसी अन्य भाषा में पढ़ा-पढ़ाया जा सकता है, परंतु गत वर्षों में हिंदी भाषा में भी वैज्ञानिक साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुआ है। विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान वृद्धि के लिए वैज्ञानिक हिंदी की शब्दावली और विभिन्न प्रयोगों की जानकारी आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

पूर्व अपेक्षाएँ: हिंदी का सामान्य ज्ञान और लिखित वैज्ञानिक सामग्री का सामान्य परिचय और सामान्य तार्किक ज्ञान।

लक्ष्य: इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद विद्यार्थी विज्ञान और भाषा के आपसी संबंध से परिचित हो सकेंगे और वैज्ञानिक क्षेत्र में हिंदी के तकनीकी शब्दों का उपयुक्त उपयोग कर सकेंगे।

शिक्षण बिंदु

1. वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक विकास
2. भारतीय विज्ञान
3. जनसंख्या वृद्धि और विज्ञान
4. कंप्यूटर, इंटरनेट और हिंदी
5. विज्ञान की भाषा-हिंदी
6. पारिभाषिक शब्दावली

योग्यता विस्तार

1. हिंदी में उपलब्ध विभिन्न सामग्री का अध्ययन और सामान्य वैज्ञानिक विषयों पर आलेख तैयार करना।
2. विषयानुसार विविध प्रविधियों का उपयोग

परीक्षा योजना

सिद्धान्त: 80 अंक तथा अनुशिक्षक अंकित मूल्यांकन पत्र: 20 अंक

अंक विभाजन

मूल्यांकन के लिए कुल 100 अंकों का विभाजन इस प्रकार होगा-

केंद्रिक हिंदी		85
पढ़ना		47
कविता		
पठित कविता	16	21
अपठित कविता	05	
पठित गद्य	12	18

अपठित गद्य	06	
उपन्यास पठन	08	08
लिखना		28
अभिव्यक्तिपरक	12	
प्रयोजनपरक	14	
सृजनात्मक/चिंतन 02		
व्यावहारिक व्याकरण	10	10
वैकल्पिक हिंदी	**85**	**15**
कुल योग	100	

उत्तीर्ण होने का मानदंड: 33% अंक